International Journal of Trend in Scientific Research and Development (IJTSRD)
Volume 6 Issue 4, May-June 2022 Available Online: www.ijtsrd.com e-ISSN: 2456 – 6470

ममता कालिया के साहित्य की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उपयोगिता

Vijendra Prasad Meena

Assistant Professor, Department of Hindi, Late Pandit Nawal Kishor Sharma Govt. Pg College, Dausa, Rajasthan, India

ABSTRACT

ममता कालिया (अंग्रेज़ी: Mamta Kalia जन्म: 2 नवम्बर, 1940, मथुरा, उत्तर प्रदेश) समकालीन हिंदी लेखन जगत् की अग्रणी हस्ताक्षर हैं। अंग्रेज़ी साहित्य में एम.ए. ममता कालिया का जन्म 1940 में भगवान श्रीकृष्ण की नगरी मथुरा में हुआ था। ममता कालिया ने कहानी, उपन्यास, कविता, नाटक, संस्मरण और पत्रकारिता अर्थात् साहित्य की लगभग सभी विधाओं में अपनी कलम का जादू बिखेरा। उन्होंने अपने लेखन में रोजमर्रा के संघर्ष में युद्धरत स्त्री का व्यक्तित्व उभारा। अपनी रचनाओं में वह न केवल महिलाओं से जुड़े सवाल उठाती हैं, बल्कि उन्होंने उनके उत्तर देने की भी कोशिश की हैं। ममता कालिया (02 नवम्बर,1940) एक प्रमुख भारतीय लेखिका हैं। वे कहानी[1], नाटक, उपन्यास, निबंध, कविता और पत्रकारिता अर्थात साहित्य की लगभग सभी विधाओं में हस्तक्षेप रखती हैं। हिन्दी कहानी के परिदृश्य पर उनकी उपस्थिति सातवें दशक से निरन्तर बनी हुई है। लगभग आधी सदी के काल खण्ड में उन्होंने 200 से अधिक कहानियों की रचना की है। वर्तमान में वे महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय की त्रैमासिक पत्रिका "हिन्दी" की संपादिका हैं।

How to cite this paper: Vijendra Prasad Meena "Usefulness of Mamta Kalia's Literature in the Present Perspective" Published in International Journal of Trend in Scientific Research and Development (ijtsrd), ISSN: 2456-6470, Volume-6 | Issue-4, June 2022, pp.188-193, URL: www.ijtsrd.com/papers/ijtsrd49975.pdf

IJTSRD49975

Copyright © 2022 by author(s) and International Journal of Trend in Scientific Research and Development Journal. This is an Open Access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License (CC BY 4.0) (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0)

- दो खंडों में अब तक की संपूर्ण कहानियाँ **ममता कालिया की कहानियाँ** नाम से प्रकाशित। उनके शुरुआती पाँच कहानी-संग्रहों की कहानियाँ एक साथ प्रथम खंड में तथा दूसरे खण्ड में उनके चार कहानी संग्रहों को शामिल किया गया है।
- **कहानी संग्रह**: छुटकारा, एक अदद औरत, सीट नं. छः, उसका यौवन, जाँच अभी जारी है, प्रतिदिन, मुखौटा, निर्मोही, थिएटर रोड के कौए, पच्चीस साल की लड़की।
- **उपन्यास** : बेघर(1971), नरक दर नरक(1975), प्रेम कहानी(1980), लड़कियाँ(1987), एक पत्नी के नोट्स(1997), दौड़(2000), अँधेरे का ताला(2009), दुक्खम् - सुक्खम्(2009)
- **कविता संग्रह** : खाँटी घरेलू औरत, कितने प्रश्न करूँ, नरक दर नरक, प्रेम कहानी
- **नाटक संग्रह** : यहाँ रहना मना है, आप न बदलेंगे
- **संस्मरण**: कितने शहरों में कितनी बार
- **अनुवाद** : मानवता के बंधन (उपन्यास - सॉमरसेट मॉम)
- **संपादन** : बीसवीं सदी का हिंदी महिला-लेखन,खंड ३
- वर्ष 2017 में प्रतिष्ठित 'व्यास सम्मान' (उपन्यास दुक्खम-सुक्खम के लिए
- अभिनव भारती सम्मान
- साहित्य भूषण सम्मान
- यशपाल स्मृति सम्मान
- महादेवी स्मृति पुरस्कार
- कमलेश्वर स्मृति सम्मान
- सावित्री बाई फुले स्मृति सम्मान
- अमृत सम्मान
- लमही सम्मान (2009)
- जनवाणी सम्मान (2008)
- सीता पुरस्कार (2012)

परिचय

कालिया में पैदा हुआ था वृंदावन , उत्तर प्रदेश , और अध्ययन किया दिल्ली में, एक कमाई एमए से अंग्रेजी में दिल्ली विश्वविद्यालय । उनके पिता ने भारत के राष्ट्रीय प्रसारक ऑल इंडिया रेडियो के लिए काम किया । कालिया ने मुंबई में एसएनडीटी महिला विश्वविद्यालय में पढ़ाया , और इलाहाबाद में महिला सेवा हाउस डिग्री कॉलेज में भी पढ़ाया, और २००१ में अध्यापन से सेवानिवृत्त हुए। वे कहानी, नाटक, उपन्यास, निबंध,

कविता और पत्रकारिता अर्थात साहित्य की लगभग सभी विधाओं में हस्तक्षेप रखती हैं। [1,2]

हिन्दी कहानी के परिदृश्य पर उनकी उपस्थिति सातवें दशक से निरन्तर बनी हुई है। लगभग आधी सदी के काल खण्ड में उन्होंने 200 से अधिक कहानियों की रचना की है। वर्तमान में वे महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय की त्रैमासिक पत्रिका "हिन्दी" की संपादिका हैं। कालिया के पति, रवींद्र कालिया , एक लोकप्रिय हिंदी लेखक भी थे। अपनी सेवानिवृत्ति के बाद, कालिया ने भारतीय भाषा परिषद का नेतृत्व किया, जो कोलकाता में स्थित एक साहित्यिक संगठन है, जो हिंदी में और उससे साहित्य के कार्यों का अनुवाद प्रकाशित करता है। कालिया ने 2017 में अपने उपन्यास दुखम सुक्खम के लिए भारत के सबसे अमीर साहित्यिक पुरस्कारों में से एक व्यास सम्मान जीता ।यह पुरस्कार गोवा की राज्यपाल मृदुला सिन्हा द्वारा प्रस्तुत किया गया था, जिन्होंने उपन्यास को "भारतीय संस्कृति के सार पर कब्जा करने" के रूप में वर्णित किया था। । कालिया के पिछले उपन्यास, Beghar (बेघर) बहुत व्यावसायिक रूप से सफल रहा था, पाँच संस्करण के लिए चल रहा है। उन्होंने कई उपन्यास और लघु कहानियों का संग्रह, कविता के चार संग्रह है, साथ ही दो नाटकों संग्रह लिखा है। वह वर्तमान में इलाहाबाद के इतिहास के बारे में एक पुस्तक के रूप में अपने पति की जीवनी लिख रहे हैं। साथ ही, महिलाओं, भारत में अक्सर मध्यम वर्गीय परिवारों में से रहते अनुभवों के साथ उसके लेखन संलग्न। वह है यशपाल कथा सम्मान, साहित्य भूषण सम्मान, राम मनोहर लोहिया सम्मान, महादेवी वर्मा सम्मान और सीता पुरस्कार सहित कई अन्य साहित्यिक पुरस्कार भी जीते। [3,4]

साहित्य और समाज का संबंध, रचनाकारों द्वारा यथार्थ परिस्थितियों का आंकलन करना होता हैं। ममता कालिया के कहानी सग्रंह में नारी पात्र अस्तित्वहीन होकर अपने अस्तित्व की तलाश में लगातार संघर्ष कर रहे है। आज की नारी पुरूष के समक्ष ही नही अपितु अनेक क्षेत्रों में अपना वर्चस्व को स्थापित करने की तलाश में है। नारी ने अपनी मेहनत द्वारा अपने अस्तित्व को एक अलग पहचान दी है। वे परंपरागत रूढियों को तोड़कर आगे बढ़ रही हैं। वे किसी प्रकार का शोषण व अत्याचार को सहन नही कर रही हैं बल्कि अन्नाय के खिलाफ पूर्ण रूप से सघंर्ष करती हुई नजर आ आती हैं। ममता कालिया के कहानी संग्रह ' मुखौटा ' में नारी अपने अस्तित्व की तलाश कर रही है जिसका वर्णन विभिन्न कहानियों द्वारा किया गया हैं। ममता कालिया के ' मुखौटा ' कहानी संग्रह की कहानी ' चिरकुमारी ' में नारी अपने स्वतन्त्र विचारों द्वारा अस्तित्व को तलाश रही हैं। इसी कहानी सग्रंह की कहानी ' प्रतिप्रश्न ' में महिमा नायिका का अकेलेपन से झूझते हुए व अविवाहित कामकाजी नारी होते हुए भी विवादास्पद जीवन यापन करना। ' उत्तर - अनुराग ' कहानी में ' खन्नी आंटी ' का पति की बेवफाई को सहन करते हुए भी अपने अस्तित्व को कायम न कर पाना। ' श्यामा ' कहानी में श्यामा नायिका अपने पति द्वारा अत्याचार व शोषण को सहन करती हुए अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए प्रयत्नशील होना। ' सीमा ' कहानी में नायिका ' सीमा ' अपने द्वारा प्रताड़ित व दुखों को सहन करती हुई अपने अस्तित्व अर्थात अपने स्व की पहचान बनाने के लिए संघर्ष करना। इस शोध पत्र में ममता कालिया के कहानी संग्रह मुखौटा में नारी पात्र जो अस्तित्वहीन हुए, अपने अस्तित्व की तलाश में उन्हे जो संघर्ष करना पड़ा, सभी पहलुओं पर चिंतन करना ही इस शोध - पत्र का उद्देश्य है।[5,6]

विचार-विमर्श

साहित्य को मानव मन की विशेष रमणीय अनुभूति कहा जाता है। समाज में इसकी परिधि बहुत ही व्यापक व विस्तृत होती है। कहानी एक प्रकार की कला होती है और इस कला का समाज से अलग होकर कोई महत्व नही रह जाता। इसमें जीवन को गहराई जानने व जीवन की वास्तविकता को जानने का अवसर मिलता है। ममता कालिया के कहानी सग्रंह में जीवन संबंधी समस्याओं का यथार्थ अंकन करते हुए अपनी कहानियों में उजागर किया है क्योंकि वह स्वंय नारी होकर नारी के दर्द को ब्यांन कर सकती है।

नारी अस्मिता का अभिप्राय नारी के सामाजिक व आर्थिक अधिकारों की प्राप्ति से है। वर्तमान समय में नारी ऐसे समय से गुजर रही है जहां पर उसका एक पांव घर से बाहर है और दूसरा रसोई के चैखट के अंदर है। समय की मांग अनुसार नारी जीवन संबंधी समस्याओं को उभारा गया है, और नारी अस्मिता की तलाश की ओर अग्रसर करने का बीड़ा उठाया गया है। ममता कालिया की कहानियां भोगे हुए जीवन का यथार्थ है। इनकी कहानियों के द्धारा नारी अपनी अस्मिता की तलाश कर रही है। इन्होनें नारी की समस्याओं को बड़ी गहनता के साथ प्रस्तुत किया है। इनकी कहानियां का विषय नारी जीवन का केवल प्रेम और विवाह तक सीमित नही है बल्कि आत्मविश्वास में वृद्धि कर समाज में अपनी अस्मिता की पहचान कराना है। इन्होनें यह माना है कि नारी को अपने मानसिक स्तर में बदलाव लाना चाहिए, ताकि वह अपने अकेलेपन, घुटन, मुक्ति की छटपाहट की स्थिती से बाहर आ सके।[7,8]

नारी अस्मिता क्या है ? क्या पुरूष के समान अधिकार ग्रहण करना नारी अस्मिता है। क्या केवल स्वतंत्र होकर निर्णय लेना या आर्थिक रूप स्वतंत्र होना नारी अस्मिता है। सही मायने में देखा जाए तो नारी अस्मिता का अर्थ नारी के प्रति समाज का

दृष्टिकोण व मानसिकता में बदलाव और जिसमें खुद नारी का दृष्टिकोण भी शामिल हो।

" नारी सशक्तिकरण के इस दौर में भारतीय नारी विषयक दृष्टि की प्रसंगिकता अब पूरे विश्व में सिद्ध हो रही है। नारी अब अबला, प्रशिक्षित, सुकोमला नहीं रही। बड़े - बड़े संघर्ष और चुनौतियां और संकटों में उसकी रचनात्मक तथा शक्ति रूपा छवि अब विशेष रूप से उजागर होने लगे है। वह दया, क्षमा, स्नेह, वात्सल्य की प्रतिमूर्ति तो है ही, परिवार, समाज तथा राष्ट्र के निर्माण और विकास में भी हर प्रकार से सक्रिय एवं समाहित दिखनी लगी। "[1]

इक्कीसवीं सदी में भी आज भारतीय समाज में नारी को वह दर्जा व सम्मान नही मिल पाया जो उसे मिल जाना चाहिए था। वर्तमान समाज में भी वधु - दहन, तलाक आदि सब कुछ बेधड़क हमारे समाज में निर्भयतापूर्वक हो रहा है। और जिसके लिए नारी को ही दोषी माना जाता है।[9,10]

" नारी अस्मिता सदियों की जड़ मानसिकता और सामाजिक अंतक्रियों और असमानता के प्रति बदलाव लाना चाहती है। शिक्षा के प्रसार और संचार माध्यमों के कारण बढ़ती जागरूकता के कारण समाज में नारी पारंपरिक छवि एक परिवर्तन संस्करण के रूप में सामने आई है। पुरानी पस्थितियां बदली हैं, परिवार व्यवस्थायें बदली हैं, अधिकार चेतना बदली है किंतु नारी की मूलभूत स्थिति में अंतर नहीं आया। नारी को परिवार के दायरे तक ही सीमित मानने की मानसिकता, पत्नित्व और मातृत्व की रुढ़ अवधारणायें और कठोर बंधन तथा नारी चिंतन की आदर्श छवि के प्रति जकड़न उसे किसी भी स्वतंत्र सोच से परहेज करना सिखाती है। "[2]

वर्तमान समय में नारी अपने अस्तित्व के प्रति सजग है। ममता कालिया की कहानी संग्रह में नारी के अस्तित्व, पीड़ा, विद्रोह, संघर्ष का स्वर इनकी कहानियों में प्रकट हुआ है। ममता कालिया अपनी कहानियों के द्वारा समाज को प्रभावित करने में सफल रही है। उन्होंने नारी जीवन की अनेक समस्याओं को लेकर कहानियां लिखी है। स्वतत्रंता के बाद भी नारी अनेक प्रकार की कुरीतियों, प्रथाओं, घरेलू हिंसा व अपने अधिकारों को प्राप्त करने के लिए उसे नारी संघर्ष के विविध रुपों का चित्रण किया है - माँ, पत्नि, बहन, बेटी नारी के विविध रूप जो अपने अस्तित्व पाने के लिए लड़ रहे हैं, समाज में उनको समानजनक स्थान नहीं है, इन सब का चित्रण ममता कालिया की कहानी संग्रह में मिलता है।

वर्तमान समाज नारी यहां भी हो चाहे वह घर, परिवार व समाज में हो, हर जगह इस का शोषण हो रहा है परंतु आज भी समाज व्यवस्था में भी इन परिस्थितियों में कुछ खास परिवर्तन नहीं हुआ है। ममता कालिया की कहानियां चिरकुमारी, प्रतिप्रश्न, उत्तर अनुराग, अलमारी, श्यामा और सीमा आदि कहानियों में नारी अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करती हुई दिखाई देती है।

ममता कालिया कभी समाज के पूरे परिवेश में समकालीन सरोकार ढूंढती है तो कभी नयी स्वतंत्रायोत्तर नारी को उसके पूरे वैभव और संघर्ष में चित्रित करती हैं। इनकी कहानियों में अनुभव और अनुभूति की दीप्ति, २ष्टिकोण के खुलेपन के साथ मिलकर हिंदी कहानी के उस स्वरूप को परिभाषित करती है।

' चिरकुमारी ' कहानी में ऐसी नारी का चित्रण दिखाई देता है जो स्वतंत्र विचारों वाली है। वह विवाहित जीवन जीने के हक में नही है। वह शादी के नाम पर अपनी आजादी को खोना नही चाहती। " दिशा के घर में हर वक्त रौनक रहती। उसे बडी हैरानी होती जब आने वाले कहते , ' कैसे रह लेती हो अकेली, दिल नही घबराता तुम्हारा ' । शादीशुदा लोग समझाते , ' पैतीस की उम्र इतनी ज्यादा भी नही होती। ' हमें बताए कोई अच्छा सा लड़का। हैरानी की बात यह कि पच्चीस - तीस साल के विवाहित जीवन के बाद भी पत्नियों में असुरक्षा की भावना थी। दिशा को तकरीबन इतने ही साल हो गये शादी शुदा लोगों के रिश्ते परखते। "[3]

ममता कालिया ने नारी जीवन को केन्द्र मानकर कहानियां लिखी। इन्होनें नारी के दुख - दर्द को कहानी में लाने का प्रयास किया है। जीवन के विभिन्न पड़ावों पर जुझती और तकलीफों को सहन करती, और उनके जीवन की समस्याओं का चित्रण किया है।

' अलमारी ' कहानी में लड़की के माता - पिता की मनोदशा के बारे में बताया गया है। जब एक लड़की का रिश्ता तय होता है तब लड़की के माता - पिता दहेज एकत्रित करने में लग जाते है। ससुराल वालों की मांग पूरी करते - करते लड़की के माता - पिता के ऋण लेने की नौबत आ जाती है और लड़के वालो की मांग पूरी न होने पर केरोसीन डालकर जलाने की स्थिति व तलाक या घर से बाहर निकालने की स्थिति बना देते है ससुरालवाले। कहानी में बताया गया है कि " गाय बछड़ा बेचकर घड़ी, साइकिल, ट्राजिस्टर तो खरीद लिए है, गुरूजी पर अलमारी नही आयी हैं। हल्की से हल्की अलमारी भी पाँच सौ की है। लड़के वाले की लिस्ट में अलमारी सबसे ऊपर लिखी है। "[4]

परिवार के भीतर - बाहर सुरक्षा और संरक्षण की प्रकिया में औरतें पुरूषों के हाथों जब बार - बार छली जाती हैं तो अपने - अपने मनचाहे या उपलब्ध रास्ते खुद चुनती है या कोई और रास्ता मिलने तक ही सता पुरूष की शरण में रहती हैं।

आज नारी जिस मोड़ पर खड़ी हैं उससे नारी अस्तित्व पर शंसय व्यक्त किया जा रहा है। क्या नारी अपने स्वंय की पहचान बना पायेगी " नारी लक्ष्मी है, नारी देवी है, नारी माता हैं। इसलिए तो नारी की स्थिति चिंतनतीय है। नारी अपने अस्तित्व और अपनी स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष करती आई है। वह अपनी आत्मनिर्भरता को प्राप्त करने के लिए कठिन परिस्थितियों का सामना करती आई है। ममता कालिया की उत्तर - अनुराग कहानी में खन्नी आंटी का अकेलापन पति का कार्यव्यवस्ता का वर्णन किया गया है। इस कहानी में दर्शाया गया है कि ' रेनू ' नायिका का अकेलापन को दूर करने के लिए घर के कामों में अपने आप को व्यस्त रखना। एक दिन कार्यव्यस्ता और अकेलापन के कारण उनकी मृत्यु हो जाती है। नारी सारी उम्र अपने आप को घर के कामों में, पति की देखभाल व बच्चों के ख्याल रखने में गंवा देती है पर उसकी कभी अपनी स्व - पहचान नही बना पाती न ही वह कभी अपने विचारों को किसी के समक्ष खुलकर वर्णन कर पाती है।

इनकी कहानियों में घरेलू नारी जीवन की त्रासदी का वर्णन किया गया है, घर - परिवार से बाहर शोषण व अत्याचार का शिकार होती नारी का यथार्थ अंकन किया गया है। दामत्य जीवन में नारी

का स्वतंत्र व्यक्तित्व की चाह इनकी कहानियों में मुख्य रूप से उभर कर आई है। नारी को अपनी स्वतंत्र पहचान बनाने के लिए आत्मनिर्भर बनना पड़ेगा।

' श्यामा ' कहानी में श्यामा अपनी खुद की पहचान बनाने के लिए संघर्ष करती है पर वह खुद की पहचान बना नहीं है पाती, और वह पति द्धारा किए गए शोषण व अत्याचार का शिकार हो जाती है और एक दिन अपना दम तोड़ देती है। " तुम विरोध क्यों नही करतीं पत्नी हो घर तुमारा है वे कैसे हावी हो सकते है। उनकी सख्ती के आगे एक नही चलती गुस्से में हाथ भी उठा देते है। हर बार उसकी बातों से पता चलता उसके पति आक्रामक और गैर जिम्मेदार हो गये है।[3,4]

एक दिन जार्जटाउन से गुजरते हुए मेरी नजर एक मर कंकाल जैसी आकृति पर पड़ी जो बड़ी परिचित नजर से मेरी ओर देख रही थी उसने खिड़की से अपना सूखा सांवला हाथ निकालकर मुझे बुलाया, मैं उसको आप को अंदर बुला नहीं सकती आजकल ताला लगाकर आधिम जाते हैं। तभी एक दिन अखबार के स्थानीय पृष्ठ पर एक कालम में सबसे नीचे छोटी सी खबर दिखाई दी, रमेश चन्द श्रीवास्तव की पत्नी श्यामा श्रीवास्तव सीडी से गिरकर बेहोश हो गई उपचार के लिए अस्पताल ले जाया गया यहां आज सवेरे दम टूट गया। "[5]

वर्तमान समय में भी नारी को बोलने का मौका नहीं दिया जाता। नारी अस्मिता के निर्माण के लिए नारी की चुप्पी को कैसे तोड़ा जाए। नारी अस्मिता के सामने उसकी सबसे बड़ी चुनौती पितृसत्तात्मक संबंध, मूल्य और समाज है। नारी का कभी अपनी इच्छा का तो सवाल नहीं है, उसे कभी समाज माता - पिता व पति की इच्छा अनुसार ही अपना जीवन व्यतीत करना होता है।

' सीमा ' कहानी में सीमा नायिका द्वारा यह दर्शाया गया है कि " पहले बच्चों को अपनी सीमाएं बताओ। फिर उससे कहो ' सोच लो ' क्या सोचो। ' सीमा ' उसका नाम ही मां - बाप में सीमा रख दिया था, अपनी सीमा सोच कर उन्हें उसकी संभावना, सपनों और इरादों से कोई मतलब नहीं था। इस पार ही क्या था जो उस पार से डर लगता। घर में मां बाप के अठपंचे चंगुल में सीमा घुट चली थी। पिता के मन में थोड़ी हमदर्दी थी। पर वे कायर थे। वे न सिर्फ मां में डरते बल्कि समाज से भी। "[6]

सीमा को लगा शादी के साथ साथ व सब बंदिशे खत्म हो जाएंगी जो इस घर में उसने झेली। पितृसत्तात्मक समाज में नारी की अपनी स्वतंत्रता पहचान व व्यक्तित्व नहीं है, नारी की अस्मिता को तय करने वाला पुरुष ही है।

ममता कालिया की कहानियों में ऐसी नारी का चित्रण दिखाई देता है जो स्वतंत्र विचारों वाली है, वह विवाहित जीवन जीने के हक में नहीं है। " और सबकी समस्याएं ढूंढने में तत्पर रहती है। "[7] ऐसा वर्णन ममता कालिया की कहानी ' चिरकुमारी ' में देखने को मिलता है। ' दिशा ' सोचती कितनी मुश्किल से उसने यहां तक का सफर तय किया है, कई तरह की ज्यादतियों और कमियों का मुकाबला उसने अपनी शिक्षा और प्रखर चेतना से किया था। " यूनिवर्सिटी में वह जंतु विज्ञान के प्राध्यापक थी लेकिन उसकी रुचिओं का क्षेत्र जीव जंतुओं के संसार से आगे था। इसलिए अगर कोई छात्र अपनी समस्या लेकर आती वह उसके हल ढूंढने की कोशिश करती। "[8]

' प्रतिप्रश्न ' कहानी में ऐसी नारी के स्वरुप को परिभाषित किया है जो अपनी अस्मिता की तलाश में है। इसमें अविवाहित कामकाजी नारी का वर्णन किया है जो अपने अकेलेपन को दूर करने के लिए ऑफिस में अधिक परिश्रम करती है। " यह तो मेरी जिंदगी है अकंल। रात को इतनी थककर घर पहुँचू कि बिस्तर पर पड़ते ही नीद आ जाए। आपकी तरह मुझे वेलियम फाइव नही खानी पड़ती। [9]

हमारे समाज में नारी के अनेक रूपों का वर्णन मिलता है। वह हमारे समाज से ही किसी न किसी रूप में प्रताड़ित होते है या अपनी अस्मिता की रक्षा के लिए प्रयासरत रहती हैं। ममता कालिया का कहानी संग्रह ' मुखौटा ' नारी के अस्मिता की तलाश की कहानियां है।

अन्त में कह सकते हैं कि ' मुखौटा ' में नारी अस्मिता से संबंधित विविध आयाम नारी जीवन के तनाव व दाम्पत्य जीवन की मुश्किलें, संघर्ष, नारी जीवन की यातनाएं आदि का यथार्थ वर्णन किया गया है। इस कहानी संग्रह के माध्यम से नारी जीवन से जुड़ी हुई हर उस मानसिकता को बदलने पर भी जोर दिया है कि नारी व पुरुष में भिन्नता होती है पर उनमें भेद नहीं करना चाहिए। यह कहानी संग्रह नारी के कई रूपों में अत्याचार व अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करते हुए परिलक्षित कर अपनी अस्मिता की तलाश कर एक नई सोच प्रदान करता है। इनके कहानियों से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि यह लेखन आत्मविश्वास और नारी अस्मिता को जागृत करता है। इनकी कहानियों की प्रमुख विशेषता यह है कि इनका दृष्टिकोण पाश्चात्य न होकर भारतीय रहा है।[10]

परिणाम

चंडीगढ़ की एक साहित्यिक गोष्ठी में ममता जी की भेंट रवीन्द्र कालिया जी से हुई। रवीन्द्र जी और ममता जी दोनों एक-दूसरे के व्यक्तित्व से इतने प्रभावित हुए कि 12 दिसम्बर, 1964 में प्रणय सूत्र में बंध गए। शादी के समय रवीन्द्र जी टाइम्स ऑफ इण्डिया में कार्यरत थे। आपके विवाह समारोह में हिन्दी साहित्य जगत के बहुचर्चित रचनाकार जेनेंद्र, मोहन राकेश, कमलेश्वर, प्रभाकर माचवे, मुन्नू भंडारी, कृष्णा सोबती आदि शामिल हुए। ममता जी ने अपने पति रवीन्द्र जी के लिए अपना भविष्य अनेक बार दाँव पर लगाया।

उन्होंने अपने वैवाहिक जीवन में अथाह संघर्ष और कष्ट का सामना किया। नौकरियाँ छोड़ी, परन्तु अडिग चांन की तरह पति के कदम-से-कदम तथा कंधे-से-कंधा मिला कर चली। कभी भी आत्म-विश्वास कम न होने दिया। 'प्रेस स्वीधीनता' की भारी चोट की चपेट में आने के बाद रविन्द्र जी ने इलाहाबाद वापस आने का निश्चय किया, तो आपने भी नौकरी से इस्तीफा दे इलाहाबाद चली आई। ममता कालिया जी और रवीन्द्र कालिया जी के वैवाहिक जीवन से दो पुत्रों की प्राप्ति हुई। बड़ा बेटा अनिरुद्ध मुंबई में एक बहुराष्ट्रीय कम्पनी में नेशनल सेल्स मैनेजर है तथा छोटा बेटा प्रबुद्ध इलाहाबाद में सॉफ्टवेयर तकनीकी विशेषज्ञ है।

रवीन्द्र जी के स्वयं कहते थे, ''बच्चों के मन में छवि कुछ-कुछ 'सांताक्लॉज' जेसी है। वह बहू-बेटी, पत्नी, लेखिका, प्रिंसिपल तो बहुत बाद में है, पहले माँ है। बच्चों ने जो ुरमाइश रख दी, वह पूरी ही होगी, यह ममता का नियम है। बच्चों ने मेरे सामने अपनी

माँग रखी ही नही। मुझे यह भी मालूम नही रहता कि बच्चों कीस कितनी है। उनके ट्यूटर को क्या दिया जाता है।"[11,12]

ममता कालिया जी को बचपन से ही साहित्यिक परिवेश मिला। पिता हिन्दी और अंग्रेजी विषय के साहित्य में रूझान रखते थे और आपके चाचा भारत भूषण अग्रवाल उस समय के प्रख्यात साहित्यकार थे। बी.ए. की पढाई के दौरान ही आपने कविताएँ लिखना आरंभ कर दिया। 'जागरण' अखबार के रविवारीय अंक में आपकी पहली कविता 'प्रयोगवाद प्रियतम' छपी।

आपने 1960 से साहसी और उत्तेजक कविताओं की रचना की। इन कविताओं ने सभी साहित्यकारों का ध्यान आकर्षित कर लिया। आपकी आरंभिक कविताओं में आक्रोश प्रतीत होता है। ममता कालिया जी अपने साहित्य लेखन की प्रेरणा के लिए मथुरा और मुंबई को विशेष मानती हैं। "मथुरा मेरी कहानियों में बी धड़कती रहती है- कभी आवेश बनकर कभी परिवेश बनकर। मथुरा की यादें दराज में पड़े मुड़े-मुड़े कागजों की तरह हैं जिनमें तारतम्य नही बैठा पायी हूँ।"

रवीन्द्र जी लिखते हैं, ''ममता के लिए लेखन सबसे बड़ा प्यारा पलायन भी है। वह किसी बात से परेशान होगी तो लिखने बैठ जायेगी। उसके बाद एकदम संतुलित हो जाएगी।"

सन् 1963 में दिल्ली विश्वविद्यालय में एम.ए. की उपाधि प्राप्त करते ही दिल्ली के दौलतराम कॉलेज में आपको प्राध्यापक की नौकरी मिल गई। कुछ दिनों बाद पिता के तबादले के चलते वह मुंबई चली आई। सन् 1964 में रवèंद्र जी से शादी करने के उपरान्त एस.एन.डी.टी. यूनिवर्सिटी में प्राध्यापक कार्य किया। रवीन्द्र जी ने 'धर्मयुग' की नौकरी से इस्तीफा दे, साझेदारी में प्रेस की शुरुआत की, मगर 'स्वाधीनता प्रेस' ने उन्हें सड़क पर ला खड़ा कर दिया। इस वजह से रवीन्द्र जी मुंबई से इलाहाबाद वापस आ गए तो ममता जी भी नौकरी छोड़कर इलाहाबाद आ गई।

ममता जी सन् 1973 में इलाहाबाद में संप्रति महिला सेवा सदन डिग्री कॉलेज की प्राचार्य बन। सेवानिवृत्ति उपरांत भी आप लेखन और सम्पादन कार्य से जुड़ी रही। महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय की अंग्रेजी पत्रिका 'हिन्दी' का संपादन कार्य किया।[13]

निष्कर्ष

ममता कालिया की उपलब्धियाँ

1. सन् 1963 में 'साप्ताहिक हिंदुस्तान' दिल्ली की ओर से तथा सन् 1976 में 'सरस्वती प्रेस' की ओर से सर्वश्रेष्ठ कहानीकार एवं कहानी का पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया।
2. 'उसका यौवन' कहानी संग्रह पर सन् 1985 में उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा 'यशपाल कथा सम्मान' से विभूषित किया गया।
3. सन् 1990 में 'अभिनय भारती' कोलकाता की ओर से समग्र कथा-साहित्य पर रचना सम्मान तथा इसी वर्ष में 'रोटरी क्लब' इलाहाबाद की ओर से 'वाकेशनल पुरस्कार' प्राप्त हुआ।
4. सन् 1998 में 'एक पत्नी के नोट्स' उपन्यास के लिए 'उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान' की ओर से 'महादेवी वर्मा अनुशंसा सम्मान' मिला।
5. सन् 1999 में 'बोलने वाली औरत' कहानी संग्रह पर 'सावित्री बाई फुले' पुरस्कार से सम्मानित किया गया।
6. सन् 2002 में 'मानव संस्थान मंत्रलय' के तरफ से सृजनात्मक लेखन के लिए सम्मानित किया गया।
7. सन् 2004 में उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान का 'साहित्य भूषण' सम्मान भी दिया गया।
8. सन् 2011 में आपको प्रेमचंद की परंपरा को आगे बढाने के लिए 'लमही सम्मान' से पुरस्कृत किया गया।
9. 'कितने शहरों में कितनी बार' पुस्तक के लिए सन् 2012 में आपको द्वितीय 'सीता पुरस्कार' से सम्मानित किया गया।

संदर्भ

[1] कालिया, ममता. "ममता कालिया की कहानी-परदेसी". अभिव्यक्ति (वेब पत्रिका). मूल (अभिव्यक्ति) से 19 मार्च 2015 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 15 मार्च 15 मार्च 2014. |author-link1= के मान की जाँच करें (मदद); |access-date= में तिथि प्राचल का मान जाँचें (मदद)

[2] कालिया, ममता. "पुस्तक की भूमिका". वाणी प्रकाशन. मूल से 15 मार्च 2014 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 15 मार्च 15 मार्च 2014. |access-date= में तिथि प्राचल का मान जाँचें (मदद)

[3] कालिया, ममता. "लेखक ममता कालिया का व्यक्तित्व". महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय. मूल (हिन्दी समय) से 5 मई 2015 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 15 मार्च 15 मार्च 2014. |access-date= में तिथि प्राचल का मान जाँचें (मदद)

[4] कालिया, ममता. "ममता कालिया का व्यक्तित्व". अभिव्यक्ति (वेब पत्रिका). मूल (अभिव्यक्ति) से 19 मार्च 2015 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 15 मार्च 15 मार्च 2014. |author-link1= के मान की जाँच करें (मदद); |access-date= में तिथि प्राचल का मान जाँचें (मदद)

[5] शीर्षक:ममता कालिया की कहानियाँ - भाग 1, प्रकाशक=:वाणी प्रकाशन, आईएसबीएन : 81-8143-300-9, प्रकाशित :फरवरी 02, 2005:, मुखपृष्ठ :सजिल्द:, भाषा:हिन्दी

[6] शीर्षक:ममता कालिया की कहानियाँ भाग-2, प्रकाशक:वाणी प्रकाशन, आईएसबीएन : 81-8143-485-4, प्रकाशित:फरवरी 02, 2006, मुखपृष्ठ :सजिल्द, भाषा:हिन्दी

[7] कालिया, ममता. "ममता कालिया की पुस्तकें". भारतीय साहित्य संग्रह. मूल से 15 मार्च 2014 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 15 मार्च 15 मार्च 2014. |access-date= में तिथि प्राचल का मान जाँचें (मदद)

[8] शीर्षक:कितने शहरों में कितनी बार, प्रकाशक:वाणी प्रकाशन:, आईएसबीएन : 9788126718764, प्रकाशित : फरवरी जनवरी 01, 2010, मुखपृष्ठ : सजिल्द, भाषा:हिन्दी

[9] "साहित्यकार ममता कालिया को व्यास सम्मान". मूल से 19 अक्तूबर 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 19 अक्तूबर 2018.

[10] "Hindi writer Mamta Kalia to get the 27th Vyas Samman". मूल से 9 दिसंबर 2017 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 8 दिसंबर 2017.

[11] "कहानीकार ममता कालिया को लमही सम्मान". नवभारत टाइम्स. 28 जून 2010. मूल से 15 मार्च 2014 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 15 मार्च 15 मार्च 2014. |access-date= में तिथि प्राचल का मान जाँचें (मदद)

[12] "समालोचना में समाचार". मूल से 15 मार्च 2014 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 15 मार्च 2014.

[13] हिन्दी भाषा की लेखिका ममता कालिया को द्वितीय सीता पुरस्कार Archived 2014-03-15 at the Wayback Machineजागरण जोश (हिन्दी)